

१४९ मेदिनी

१६ तु कं पूर्वपी ० कु आग्नेयांग्रिनोक्तं । दहि १ ध्यानिवतानं । अग्निदिह ध्वने म  
वान् १ धपी ० वायुव्यध कलानित १ उरुननुकपादकु ० ॥ नोरी मरूपकं ॥ अ  
वं उर्व अवनरेन वा हंतुकादि महापी ० मध्यपी ० प्रपूजय ० हंतुकादि ॥ ॥



१३ नमः सर्वस्व स्वे ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ गन्तव्यमिदं वदन्ति वदन्ति नमः ॥  
अथ विद्याया विद्यामन्त्रोत्तराय वि ॥ १ ॥ दयः दितीयसूक्तं यमस्त्यगलं  
यमं दिव्यं दया ॥ दया दया नया ॥ २ ॥ अथि ॥ दिमन्ति मन्त्रं कापसः मोक्ष  
संयमीयागी वरुणा साधुश्च पातु व ॥ ३ ॥ दीर्घं माहागिश्च कर्म न तासि तं वि  
मसि द्वाक्यन्ता ॥ गन्तुमग ॥ यदी ॥ ४ ॥ हृष्टमिष्टं धिर्वी पृथ्वी हृष्टं वासदिनीमदी ॥

मं नीधारी दमाविश्वं कृत्वा वनि ॥ ५ ॥ वसुधाधवनी दाना नीधमा धविश्वं दितिश्च ॥ ६ ॥ कृष्णि  
नीवाधवावा वीजगनी ॥ गेवसुधवा ॥ ७ ॥ गत्यश्च यधव ॥ गेल ॥ गत्यश्च यधनिर्नृय ॥ गत्यः  
ययव ॥ वद ॥ गदमन्त्रश्च यदयग ॥ १ ॥ दवी हृदयव ॥ २ ॥ गीयवर्त ॥ सान्मानगि वि ॥  
॥ नग ॥ गिलावयादिश्च गिरिवीनि दकून्मव ॥ ३ ॥ अस्ते पार्थिव ॥ सान्मान्मरवलापयका  
॥ ४ ॥ निगममका दन्तश्च गदा वपिनि वि ॥ स्मृता ॥ एवाजाधिय ॥ यमिस्वामी नाथ ॥ यवि वृध ॥







॥ १० ॥ यमिषत्कर्मयद्गं गङ्गासर्वसंविद् ॥ कमलं तलिनं यद्गं सबाजं सर्वसीवद्गं  
 ॥ २० ॥ खवदुर्गं काकनदं पृथुवीकं मरुत्तली ॥ वृन्दी वरमवविन्दं गतं पुरुषं पृथुव्यं  
 ॥ २१ ॥ तदगी विनिनीहया उगतिर्वस्तलीलना ॥ वल्लीनामानिथा अनिवाविधेव्यं ध ३  
 ना ॥ २२ ॥ सागस्विनी धनी सिन्धुः सुवकीति मग्नपग्न ॥ नदीनदादि बहुश्च सवित्तमान  
 वद्भिनी ॥ २३ ॥ न त्यक्त्वि रुवत्य विपावा वा मृगा इव ॥ अयाव याव कृपा वा वलसीना

रिधाकव ॥ २४ ॥ समुद्रावाविवाणिश्च सविस्मान्सागभाह्व ॥ सीमायकं चूनी वक्ष्याव  
 बाधवधिसुट ॥ २५ ॥ रुद्रसुवद्गं कल्लोला वीर्यमिह कलिकावलि ॥ यला वलागं द्वा  
 सा विजुभाय सुदन्वन ॥ २६ ॥ मनू धामानू धामल्लमिनुडा मानवानेव नव ॥ नायू मा  
 नू पूर्व भाग्नत्वां धवः स्यात्तुत्यतिन्वय ॥ २७ ॥ रुद्राथ रुद्र कः पतिः पदाग्नानू  
 म ॥ रुद्रानू जीव नूतन ॥ मृगा जीव विद्वद्ग ॥ २८ ॥ सीमाया वनिता मृध्वा कामिनी लल



नावधशाजनाकामिनीयासितानीसीमनिनीगथा॥२९॥निगमिन्ववलावाधकामूकी  
वासनाचन॥रुमाननूदनीवामासुन्दनिसुथा॥३०॥राय्याडायीडनीकल्याकलर्गंग  
हिमीगृह॥महिर्मासिनीपलीगथादावाधवन्धय॥३१॥वल्गुकापुयसीधुवाव  
मदादयितापिया॥वृद्धावयुमदाकानावधुयलियिनीगथा॥३२॥सतीपनिवगासा  
धीयनिपलीकपल्यपि॥मनसिनीरुवल्यायावियनीगानिबूयन॥३३॥वन्धकीकलः

पमकायनरु॥यंशलीखला॥स्यगारिसाविदादनीस्त्रिविणीसमूवीगथा॥३४॥गानि  
कालजिकावग्नाव्याडीकविगमलिनी॥यन्यमीदाविकादासीकामूकीसर्ववल्गुका॥३  
५॥कानस्त्रीदयिगायीत्यपियाकामीवकामूका॥वल्गुका॥सूपनि॥ययानविः  
टयासंवमंगवव॥३६॥सविनीउननीमाताउनक॥सविनापिगा॥दहायेद्य  
न॥कायाडवर्षसंहवर्षवयू॥३७॥कलवर्षगनीवग्नामूलिवसिन्नुव॥सुग॥







किमानोयधायव॥४६॥ उह्निनातिस्ताराईर्नदगुगत्यनिर्निष्प॥ दलदावऊनीनकी  
दाआम्यामादयावक॥४७॥ गवनिरुपनिरुनूवध्व॥४८॥ पूमायमाववि॥ निग्मः  
व्यत(डा)यूमजिम्माह(कु)काग्रहाधिय॥४९॥ ०० न॥ सूर्यसुमाध्वस्तसिमि ५  
नाविर्विवाचन॥ दितादिवाहृदि वसावासवस्तुवश्चस॥५०॥ चववाका  
ऊपर्यायवन्धू॥ कुमूदविधिय॥ यमूनायमकातीनऊनक॥ सवितामन॥

॥५०॥ वाहाश्वकुर्वे॥ वाडी रुथाययमूर्वंगस॥ सपिववाहवीवध्व॥ सफाद्यव्यम  
रुषवान्॥५१॥ र्वविहायवियद्यामगगतकाणमम्ववम्॥ धोर्त्तकात्राकविद  
कुमघवायूपाथयथा॥५२॥ गञ्जव॥ र्ववववस्तु॥ पदीयजीयगज्यापि॥ गकूनि  
॥५३॥ कूनिर्विष्यपत(डा)विरुवायथा॥५४॥ डा इलीपिगिर्गमसि पलपणीवनत्यि  
य॥ यागुधानस्तुअवद्धा काशादिववन्व्यन॥५५॥ मूनादिगस्तुठिइत्वा संतुदव॥



[illegible]

काष्ठाककुदिग्गमश्च ददकन्यागथाहवित् ॥ नत्यर्यायधर्मार्थं प्राह ४ पुववजा  
 र्थं ॥ ६० ॥ यवनः यवमानश्च वायव्यानिनामवत् ॥ समीपेऽगन्धवाहसवकश्च  
 नागतिः ॥ ६१ ॥ नरुस्वाग्मागविश्ववयश्च जवनस्तथा ॥ पुररुजनादिपययिपुष्प  
 नाजनात्मजः ॥ ६२ ॥ नरुस्वाग्निः शिखीवक्रिः ४ पावकश्चागुगुहर्निः ॥ हिबध्वयगा  
 र्चिः ४ ज्ञानवदासूनूनात् ॥ ६३ ॥ स्वाहापनिहनागश्च ददनादलनादनलः ॥







मूरवशासमवधमटपदाहृथादिमह्यमध्वनः॥८२॥भोद्यादिप्राक्तसत्यादिकन्दयसिद्ध  
वंधनः॥हृतिवसायध्वनयूष्याद्यमुःसमासः॥८३॥ध्वडयनाकाकुरुश्रविद्धन  
द्वेडयन्यपि॥तत्तत्त्यदेभायद्यादिगम्भविध्वकवःसमासः॥८४॥कोदयकासिनमि  
नः॥कपाणः॥कववावकः॥तववाविर्मपुलायंखड्गनामावलीविद्॥८५॥अदोः  
हिनीवलानीकंवादिनीसाधनंयमू॥ध्वजिनीयननासनासेनदरुणवृथिनाः॥

वाडविमं धनं ॥ कस्वनेन तत्पिणि ॥ ५४ ॥ क्वं वं च कपि दन्तं ॥ ५५ ॥ वेप्र वलं वाड नाड मू  
कवा ग्ग पणिं तथा ॥ अल कानिल र्ज्ये ग्रीदं धन च र्ज्ये दाय कं ॥ ५६ ॥ वाड्डं डन पदा  
ति ॥ ५७ ॥ डना ना विषयः स्मृतः ॥ ५८ ॥ पूर्व पूर्वी न गर्व यदुर्न यदुर्न दनी ॥ ५९ ॥ वक्  
लय न मा स्यात् वदनि वदनी मूर्त्ति ॥ ६० ॥ न नं प्र वलं ॥ ६१ ॥ ग्रं वं कर्त्तुं ग्रं विदुः ॥ ६२ ॥  
६३ ॥ दगदि च नृन यनं दृष्टि नृनं विलाचनी ॥ कटा दं क कवा पादं विव्र मं न स्य वै ॥



करी॥७७॥दनवासाधवा (अ) वावर्तिना दगन दृदश॥ निवाधवागलायीवा कम्बुश्र  
धमनीधमश॥१००॥दाई (अ) च रुडा वाइ ४ पालि रुस कवसुथा॥ प्राइ चइइ ४ निवा  
यंगी रुसगारवा कवाइलि ४॥१०१॥नासायातमूव ४ कइ ४ कूदि स्याइ ० वादव ४॥ १२  
॥रुन ४ यथा धवा वइ ४ कूचोइमिन वंस्म ४॥१०२॥कटीनिगम्ब (अ) चीव उघर्न  
डाइं नू उइचा॥चव वं चल वं पादं कसाइइ श्र पदीविइ ४॥१०३॥निवासइलि

माइं व यावर्त्याइ वितीविती॥वायवा वयनं वावी लावतीगी ४ सवस्वगी॥१०४॥सिंह  
दि पयन गङ्गाइ मा (अ) चंदिन गङ्गा॥रुं कनखनू कलरुं गनि डं रं डलरुं गथा॥१०५॥  
॥स्यद नंवी कनमरु रुट (अ) छाव इत्तरी॥सीत्तरी मालिगं काभ रवी रुतरी गृ  
खलायू (अ)॥१०६॥मउशिव कं गुला काटि नू यूर्न गत्तगा कनी॥डाइनि वासिगं को  
अइ रुसया ४ ककन मनी॥१०७॥पमीनं संमुनं ल वं इष्टं पविचिनं स्मरी॥संस्तिगं द







अतीथिश्च तीर्थकदिव्यवाक्कनि॥११६॥ अलंतिवसनं वा सग्रीवमम्बवमं शुक्रं॥  
॥ वस्त्राद्यादिदिग्भाद्यादिसंहिता वचनं व॥११७॥ कृकर्मवचिवचकं कसूची  
मृगनाहिनी॥ कर्पूरचनसावश्च हिमसचनयुधवान्॥११८॥ समालम्ब॥१८  
गलगश्च यसाधनं विलपनं॥ रुषभारुवर्णं रुष्यमाल्यमालागुञ्ज॥८॥ सुडां॥  
॥११९॥ मत्तलानमत्तकाश्च हिमयययिसूक्तं॥ (ग्रीवाविग्रवूरीसूक्तमान

सूक्तमिवाहिनी॥१२०॥ मध्वाममध्वमेवयं सीधकादम्बवमिमाम्॥ यसनान्वावली  
मध्वं मध्वविसूताविद्॥१२१॥ गुदीवसकवोषयं (ग्रीवागुञ्जमद्यय॥  
॥ गकागिन्विद्वयानव विविगा॥ गद्यद्विगि॥१२२॥ सपिदेयद्वीवाद्यं दग्ध  
दीवामनयय॥ उदशिरुर्कं मथिनी कालायसपिवहुव॥१२३॥ यथावया  
वग्नमहापूज्योवनकं विद्॥ वल्लभयान्वयाय॥ स्मादाम्नाय॥ सननि॥ कूलं



॥१२४॥ उद्यावर्गश्च संगानं काव्यभवकवस्त्रिणि॥ मयूरा वह्निनः कदा निखीपाय  
हिकसुथा॥१२५॥ नीलकण्ठः कलायी च निखीपाय निगुहः॥ ववता ववनी हं  
सी हंसया हंसना नन॥१२६॥ हविः (न) मगयच्छक सुदं व (गर्व) वीकव॥ पन्न १५  
(ग) हि विषय बाललिहाना बुद्धिम॥१२७॥ ना (ग) वगः हली सय्य सुजा विवि  
ननात्मकः॥ सय्य गवूछ सादा गवत्मा वग कृन्तव्यव॥१२८॥ ॐ वृजिन्मनुष्य

गात्मा वेन गथा विषदय॥ स्वमिदियं द्रुमी कच्छ (ग) गानकः कवर्ण विदू॥१२९॥ य  
क्षराय च सुक रंग गधय च सत्कर्ण॥ मय्य मय्यश्च द्रविणं या य्या पय्यं च किलि  
षी॥१३०॥ वृजिर्न कलिर्लक्षेना इह कर्णक यीजिनः॥ सदर्न सद्वरु वन धिक्क  
वग्माथ मनुर्व॥१३१॥ (ग) हं नि कनना गवं निग्नर्न निवर्ण गृहं॥ वसत्य इव  
सथ वार्म स्तानं धम मास्यदं सदा॥१३२॥ मि कायं निलयं वस्यं गवर्ण विवनाल



यं॥ खर्येवान् अयं विखा व पुस्मा धव हृदि मं॥ १३३॥ प्राका व ह्यवि वि॥ गल लक्ष्य  
गली ल्या पुमा रु नि॥ प्रासा दं सो धरु म्म ष्म निम् रु म न क वा व र्णं॥ १३४॥ वा ना  
य न म मा ल म्बं मा ल म्बा सूर व मा स नं॥ स म ४ स व र्ण स रु नि स द द ४ स द ग ४ स द १ ३  
कु॥ १३५॥ रु ल्य ४ स ध र्म ४ स नृ प मु लो क दौ य मा वि धा॥ वि र्म थ वि घ मा न थ  
गु वृ स्था ना म्बु जा न न ४॥ १३६॥ सिं ह ना दी नि प थ्या य मू य मा न वृ था ज य न॥ व

पद र्ण निरुं व्या र्जं अर्दं द्य नि क र्बं क र्त्तं॥ १३७॥ क र्प र्ण व र्ण क मू ल्य द्वा ग द म न् अ नि र्ण थ  
॥ प्रा ग ४ यू ज ४ स मा ह्वा थ स मू द ४ स न् क नि र्द ४॥ १३८॥ वृ ह नि वा था नि क वा नि क  
वृ र्म क द म्ब कं॥ डा घ ४ स मू द य ४ सं द्य ४ सं द्या न ४ स मि न् मु नि ४॥ १३९॥ नि च य ४ य  
क व ४ यं कि ४ य गू ना ड ल जा न कं॥ स मी दा थ्या स मा स न म र्ण र्ण स नि र्ण वि द् ४॥ १४०  
॥ अ वि द् अ नि क ट स व ल ग्न म न क र्बं॥ जि त्या रु ली रु ल ४ सी व ला ड ल गे द वा व ल



॥१४१॥ प्रवनीदयिगानील वसनः कणवाग्रजः ॥ अह्नः नः कात्तु (न) जिष्णुः (न) वतवाजी  
कपिध्वजः ॥१४२॥ गमतीवका मूर्कः सशुभाचीमधमया तुवः ॥ वमासना सति  
स्माका देत्याविः गकनन्दनः ॥१४३॥ कर्णसूदः किरीटीचगदरुदी धनउरयः ॥ १०  
समवलीयमः कालः कनान्नामृत्वनकः ॥१४४॥ कवूकीचकायाः ॥ गणेश्वरी  
यूयुताचकादवः ॥ प्रमात्मजाः ॥ डागणः ॥ कौकशा रुवगानः ॥१४५॥ कौवः

शामाडः इष्मायमामर्त (न) यधिष्ठिरः ॥ कर्णनीलानि नः कालः कर्मधूमम  
लियुः ॥१४६॥ गमाश्च कालनिमिर्ध्वानः सनकमसनमः ॥ विधुविर्तगिग  
(न) वः ॥ इह नो वलदया तुवः ॥१४७॥ शुक्लावदाहं धवर्त या तु गुर्गुणाजिपुः ॥  
लादिनं वक्रमाणमृत्पातलं कयिगिगः ॥१४८॥ गमासं वीर्गद्वितीयं क  
र्णवीविगदावः ॥ हविनी बाहिनी (न) नी (न) वः सती पिगित्यपि ॥१४९॥ ग



वङ्गीशचली काली कालमाभिलीचपिङ्गुनी ॥ यनागमधूकिङ्कलकं मकनन्दय  
कोसमं ॥ १५० ॥ उयजानादुङ्कयगु वङ्गीशचलीचयङ्कयगु ॥ कलङ्कचयम  
लिनं किङ्कललङ्कललङ्कनं ॥ १५१ ॥ निध्वधमसमं यकमलीमसमपि १५  
रङ्कङ्क ॥ उनादाहवली कीर्ति साधुवादयङ्कविङ्क ॥ १५२ ॥ वङ्गीशचलीच  
लीरङ्कानि मवदानमुसाहसं ॥ यहादगनदगश्च निशागङ्क सनकथ ॥

॥ १५३ ॥ सङ्कलङ्कविजयं वारुषवलिङ्क किङ्कवदङ्कयि ॥ कलङ्कवङ्कठिनं सङ्कवङ्क  
गङ्कवङ्कवङ्क ॥ १५४ ॥ अङ्कलङ्कवङ्कलङ्कलङ्क कासलङ्कमङ्कयङ्कलङ्क ॥ यङ्कग  
साङ्कगङ्कनङ्क नङ्कनङ्कनमङ्कगङ्क ॥ १५५ ॥ यङ्कलङ्कङ्कमङ्कवङ्कङ्कलङ्क पाङ्कनङ्कगङ्कविङ्क  
वङ्क ॥ गङ्कवङ्कलङ्कलङ्कलङ्कलङ्क कङ्कलङ्कलङ्कनङ्कगङ्क ॥ १५६ ॥ डाङ्कलङ्कलङ्कलङ्कलङ्क  
दिनिङ्कलङ्कलङ्कलङ्कलङ्क ॥ उङ्कलङ्कलङ्कलङ्कलङ्कलङ्कलङ्क ॥ १५७ ॥ नीङ्कलङ्कलङ्क



गवर्तकृष्ण नीचवर्द्धनयत्यवी॥ अमासहसमसाकं साईसाया समृणमी॥ १५८॥ स  
धेदासगतीतिथ्यं गवदत्यनिकं सदा॥ गंगुगि हविर्नाथ हविर्गिर्यग्रगृणिनः  
॥ १५९॥ गोश्रुगुयायगुसुगु महियानामददिका॥ वियागमदनावस्का विवदुन १६  
वर्कविदुः १६०॥ यमाहिलासमानस्यवागः सदासगः यवः॥ सहर्गमहिर्गिय  
कंसर्गकंसर्वगंयर्ग॥ १६१॥ संस्कृतं समवर्द्धकृयाद्वन्वीनमविर्ग॥ वम्माधिस

वलिष्टयन्का मार्गपयवसश्चः १६२॥ विमार्गनामर्गगंयस धायागोर्मनु  
लाम्बुः १६३॥ कर्गसाश्रुवविष्कातः कृगलानिपूतः यदः १६४॥ कृष्णः यवीदः  
यागल्कः काविदयविष्मवदः॥ विदग्धश्चरुवाध्रुश्चरु कलिगवः १६५॥  
॥ १६६॥ कापिनागविकाह्या गगुसंस्कृतामनः॥ मृगं मृदाजामृका न  
शाम्बरवश्चकदः १६७॥ सदवानां पिथायाह्यामदाः धीनामवर्द्धिगः॥ यधि



कः कलि मः गालि वी हि सु स्व क वि सु धा ॥ १६६ ॥ च र्म १ स क र्म वि ज्ञा न धा उ  
 १ स द ग न १ स्म न १ ॥ सो ष्ठा वा ग द्वि न सु वा ग वी म नी पृ व ड न १ ॥ १६७ ॥ उ ड्डी वा  
 व र्च ना द का नी च अ पि गु ना ध म १ ॥ ये ये का वि क र्म न म र्क व १ य नि वा ध क १ ॥ २०  
 ॥ १६८ ॥ नि ग म य म गू र न वा ह वि क १ य लि धि य व १ ॥ य स वा प वै ल या या व  
 द म यं धा गु गि ला १ म न १ ॥ १६९ ॥ ग ग जा न म या ला ह १ ग ग क र्म न य ल य

॥ सा धी मा नि त्म म ल नं नि ग न स र्व वे र्ण ॥ १७० ॥ स्मृ ट सा धू र व ल स्य हं वि न दी प  
 प्क रं म र्ण ॥ वि ण य य १ इ नं था य वि स्म र्यं को गु का य हा ॥ १७१ ॥ अ रि या म र्थ १  
 न्मा हा १ कि ना कि वि क्रा मा म न १ ॥ दा र्म ग नं क र्ण दी नं दी नं जी र्ण व वे वि त १ ॥ १७२  
 ॥ जी र्ण व सा न न्य न य र्थ य १ लो य च य व र्ण ॥ व दान व द सा पा गु व द अ र्थे वि ति  
 न लि क १ ॥ १७३ ॥ की ना १ १ क य १ अ ल १ १ इ १ र्वी दी न य र्ण व न १ ॥ दि या १ गु म १



नैशर्ष्यं सह साप्रतिनिर्द्वर्णं ॥ १०४ ॥ तृष्णं जवः स्य दः दिव्यं वहावगस्तु बालयूः ॥ पा  
गकं नः शिवा वद्धा वदितालीनियति नः ॥ १०५ ॥ नियमितं नः त्वलिनः पनद्धः  
या शिवा विपूः ॥ कान्तं कमनं कसं व क म नीर्यं म नाद वं ॥ १०६ ॥ अतिवासं व मदी २१  
यं व म्यं सोम्यं व मूद वं ॥ वा वृत्तं व वृ वि वं एगस्तं जाम्ब वं धनं ॥ १०७ ॥ दः नि  
यं म नाद वं चित्तं पय्यय हा विव ॥ अ व श्रयं गुमा व अः यालयं रुदिनी हिमी ॥ १०८

निमित्तं जायं म दं विद्वि विलं विनं ॥ सो हा डं सो द द द द्यं सो द्यं सख्य सो व रं  
॥ १०९ ॥ मेरी मरुयिका र्ययं सा हा र्यं संगनं म नं ॥ स्वता वेप क निः शीलं नि सा म  
विप्रे निरुया ॥ ११० ॥ य मा स न नि कात्या स म्मा द रु द्दी यू न म्मा द ॥ व थ ली कं म  
ध मा र्यं विन थं विदल न थ ॥ १११ ॥ वि धू र्ब श स नं क र्क क र्क ग रु न म इ व  
॥ समस्तं स कलं स र्वं क र्क र्क वि न थं वि विलं ॥ ११२ ॥ ग क ली वि क ली ख र्क ग क ली



गौलवविदू॥ चर्मका गच्छ कलहं यविकादं कदं नयत् ॥ १७० ॥ (आलिगिलाहिनं  
वकी वृधिवंदनजासुर्ग ॥ अज्ञाकनावता १३३ मं रवलूकन्या पणि म्वया ॥ १७१ ॥ ६  
द्वाह १४ यविवयस्य विवाहस्य निवगनं ॥ गुमिविविववववव चिडगलविगद २३  
वी ॥ १७२ ॥ सर्ववसाथैयगालं नवकीयान्मममस ॥ अदरुविहयिष्टं वदि  
ष्टेवदुलं वद ॥ १७३ ॥ यचलीनिकमाचल्यजडनाडवडवा ॥ ३१३४ सुजा

स्वीगवस्वीनडस्वीचमनस्यपि ॥ १७४ ॥ रासुवा रासुव १ सूव १ प्रवीण १ सुकृष्ण  
मरु १ ॥ उववीकमसयुवीकमसहीकमस ॥ १७५ ॥ अष्टकावात्यपगमस  
र्यंकाव १ यमय १ ॥ गनूगुवर्मकवच मावनिवनिवावली ॥ १७६ ॥ कर्णमं  
कीचूकीचू मागपगदवावली ॥ कगीजिवावद्वंवाली कचीचिक्वमीद  
यत् ॥ १७७ ॥ वृजपागच्छधमीली लंवलीकगवन्धनं ॥ वकावाचस्यनिर्युत्त



गणकगयाऽपिकी॥१७८॥अदयावायनस्याननगतासुगुनवय॥ग(धमपि  
किचिक्कस्मेविगुप्रतिवाधायसुविर्ग॥१७९॥वाधयत्किंयदकुरुमयह्निः  
सहयागिकिं॥यमावंसमुकयस्यदूर्ययादस्यलदल॥२००॥दिसन्ध्या २५  
नकवः८कावः८नकगयमगिनिर्म॥कवद्वनसुखस्ययसत्कवीनांजिवा  
मनिः॥२०१॥यमावनाममालंगि(सकावावगगदय॥गमसुप्रनसुखनदय